माननीय सभापति : नियम 377 के अधीन जिन माननीय सदस्यों को विषय रखने की अनुमति प्रदान की गई है, वे सभा पटल पर अपने विषय को रखने का कष्ट करें ।

Title: Need to include 'Srimad Bhagwat Gita' in the syllabus of all educational and technical institutions.-laid

श्री भोला सिंह (बुलंदशहर): हिन्दू शास्त्रों में श्रीमद भागवत गीता का सर्वप्रथम स्थान है तथा यह भारतीय संस्कृति की आधारशिला है और विश्व में इसकी लोकप्रियता दिनों दिन बढ़ती जा रही है । गीता में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से धार्मिक सहिष्णुता की भावना को प्रस्तुत किया गया है, जो भारतीय संस्कृति की एक विशेषता है । यह स्वयं भगवान श्री कृष्ण के मुखारविंद से निकली है । मनुष्य को अपने जीवन को सफल बनाने, हर एक तनाव से दूर रहने हेतु श्रीमद भागवत गीता को हृदय में धारण करना आवश्यक है । यह जीवन को सफल बनाने का एक कल्याणकारी मार्ग है । भारत नहीं विदेशों में भी गीता का बहुत प्रचार है । संसार की शायद ही ऐसी कोई सभ्य भाषा हो, जिसमें गीता का अनुवाद न हुआ हो । उत्कृष्ट भावना का परिचायक होने के कारण गीता का सभी ग्रन्थों में सर्वोपरि स्थान है इसलिए यह किसी संप्रदाय विशेष का ग्रंथ नहीं है । पाश्चात्य विद्वान हंबाल्ट ने गीता से प्रभावित होकर कहा है कि "किसी ज्ञात भाषा में उपलब्ध ग्रन्थों में संभवत: सबसे अधिक सुंदर और दार्शनिक गीता विश्व की परम निधि है ।" अत: चूंकि, श्रीमद भागवत गीता में सभी धर्मों के ग्रन्थों का समावेश है और इसमें ईश्वर की वाणी निहित है, तथा यह ईश्वर का एक स्वरूप है । इसलिए, मेरा अनुरोध है कि विश्व प्रसिद्ध इस पवित्र ग्रंथ को देश के सभी विद्यालयों, कालिजों और तकनीकी/चिकित्सा संस्थानों के पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाना चाहिए ।